॥ श्रीः ॥

॥ होनहार ॥

सत्य घटनापूर्ण एक विचित्र उपन्यास
बाबूउत्तमसिंह वर्मा गढ़वाली लिखित

पं० बल्देवप्रसाद मिश्र मुरादाबाद निवा-
सी द्वारा परिशोधित

लखनऊ

जैनप्रेस में बाबू भगवानदास जैन जी द्वारा
मुद्रित और प्रकाशित

सितम्बर सन् १८९७ ई०

DEDICATED

TO

RAJA PRITHVEE SINGH

SAHAB BAHADUR

RAIES OOMREE

VIA

GOONA C I

With the publisher's best complements

as a token of great honor and respect

BHAGWANDASSJAIN

Publisher and Manager Jain Press

MACKBULGANG

LUCKNOW

॥ समर्पण ॥

मैं इस पुस्तक होनहार उपन्यास को (जिसका पूर्ण अधिकार ग्रंथकार से मुझ को प्राप्तिहुआ है) श्रीमान राजापृथ्वीसिंह साहब बहादुर रईश उमरी को समर्पण करताहूं और उक्तराजासाहब बहादुर का अनेकानेक धन्यवाद करताहूं जिन्होंने मेरे इस समर्पण को स्वीकार कर कृत कृत्य किया है ॥

भगवानदास जैन

मैंनेजर जैनप्रेस मकबूलगंज

लखनऊ

॥ श्री ॥

॥ होनहार ॥

॥ पहला बयान ॥

"Ye villains! Ye murderers!!
Lo! God is overhead —"

P C Rome

पंजाबदेश में बटाला भी एक नगर है ; लेकिन लाहौर या अमृतसर की समान बड़ा नहीं है। बटाला में महले दु-महले बहुतेरे हैं, भले आदमी, मतवाले, कलाल, गुण्डे बेश्या, चोर, ज्वार, और गठकटे आदि लोग भी थोड़ेनहीं रहते हैं। आधा तीतर आधा बटेर इस प्रकार का एक थियेटर अर्थात् नाट्यसमाज भी है।

इस शहर मेंया नगर में या गांव में एक सिक्ख (शिष्य)

की लकड़ी की टालथी; इस सिक्खका नाम अनूप सिंह था। अनूप सिंह का जन्म भक्त बंश में हुआ, पिता, अनूपसिंह को बालकपन मेंही छोड़कर परलोक बासीहुए थे। सो ब्राऊं छेत्र में अनूपसिंह के पिता ने तलवार पकड़ी थी। सिक्खकी मौत के साथ साथही राजलक्ष्मी की भी मृत्यु हुई। अनूपसिंह इकले रहे, काका ने लालन पालन करके बड़ाकिया। काका फे परलोक वासी होनेपर अनूपसिंह समस्त मालमतै का मालक हुआ।

अनूपसिंह बटाला में काठका रोजगार करते, परन्तु यहां से पांच कोस की दूरीपर रहते थे। इनके गृह में इनकी स्त्री और एक बिधवा कन्या को छोड़कर तीसरा कोई न था। इनके साथही अनूपसिंह अपने स्थान में रहते थे। पासही मट्टीका एक बड़ाभारी टीला था उसपरही अनूप-सिंह ने अपना घर बनाया था। टाल में कोई डेढ़लाख रुपये का माल था, इस कारण किसी का बिश्वास नहींहुआ, अतएव अनूपसिंह हरेक दिन बटाला नगर में आयाजाया करते थे। आने जाने के लिये अनूपसिंह के पास एकअच्छा घोड़ा था, परन्तु आजकलतो सारे पंजाब में रेल चलगईहै। अनूपसिंह के शरीर में इतना बलथा कि उँगली से रुपये का तोड़ना और भैंस के सींग को टेढ़ाकर देना उनकेलिये

साधारण बातथी * अत्यन्त शान्त और सरल स्वभावहोने के कारण से एक आदमी के सिवाय और कोई भी उनका शत्रु न था।

॥ दूसरा बयान ॥

शत्रुका नाम मोतीसिंह था, उसका चाल चलन बहुतही खराब था। शराब पीना, चोरी करना, जुआ खेलना, आदि अवगुण इसके नित्य के काम थे। इस कारण इसको कोई भी नहीं देख सकता था।

मोतीसिंह के—करमसिंह, दुर्जनसिंह, और लहनासिंह नामक तीन पुत्रथे। बड़ापुत्र शिकारपुर में व्योपार करता था, मझला पलटन में, और छुटका लहनासिंह पिताके साथ २ बटाला में रहा करता था। पिता पुत्रोंका चाल चलन बहुतायत से मिलता था। लहनासिंह ने एकादिन जंगल में घूमते हुए अनूपसिंह की विधवा लड़की को देखा। विधवाकी चढ़ती जवानी को निहारकर पापी का मनडामाडोल हुआ

* सिक्ख लोगों में आजकल भी ऐसे २ जवान हैं कि जो एक भैंसको सिर पर उठाकर चार २ कोस तक चले जाते हैं। यहां की भैं[illegible] भैंस बोझ में दुगनी होतीहैं।

घरपर आकर अपने पिता से सारा हालकह सुनाया। पुत्रपर अधिक प्रेमहोने के कारण से पिता ने प्रतिज्ञाकी मैं उस लड़की से तेरा विवाह करादूंगा। सिक्ख लोगों में विधवा विवाह का प्रचार है, इसी भरोसे पर मोतीसिंह ने अनूपसिंह से जाकर अपना अभिप्राय कह सुनाया। अनूप ने भली भांति से मोतीसिंह को दक्षिणा देकर बिदा किया।

कुछ दिन बीतने के उपरान्त मोतीसिंह ने अनूपसिंह के पास जाय हाथ जोड़कर माफी मांगी। अनूपसिंह ने मोतीसिंह के साथ भ्राता की समान व्यवहार किया सब झगड़ा झंझट तै होगया।

तीसरा बयान॥

बटाला से लौटते हुए अनूपसिंह को रात होजाया करती थी। सब इष्ट मित्र कहा करते थे कि इस भयानक स्थान में होकर, इतनी रात के समय इतने रुपये साथ लेजाना अच्छा नहीं है, परन्तु अनूपसिंह इस बात को सुनकर हँस देते थे। वह इस बातका बिचार नहीं करसकते थे कि दोनों बाहों के रहते हुए शिष्य को कौन भय होसक्ता है? इन में एक यहभी रोगथा कि प्रति दिन आने के समय मामा के स्थानपर हो[illegible]और बहुधा इधर

मित्रों से कहा करते थे कि "मामा के यहां का लाल शरबत बड़ा मीठा होता है।" इस के सिवाय और कोई रोग उन में नहीं था।

एक दिन ग्यारह बजगए पीछे भी अनूपसिंह घर नहीं आये। अँधेरा पाख होने के कारण घोर कठोर अन्धकार संसार में फैला हुआ है। दो बजने के पश्चात आकाश में एक टुकड़े चन्द्रमा की चांदनी चटकने लगी, अनूपसिंह तबतक न आये। नौकर चाकरों ने मट्टी के टीले से नीचे उतरकर अड्डा जमाया।

इस टीले से दक्षिण में आधामील की दूरीपर एक गांव के सिवाय फिर दशमीलतक कोई दूसरा गांव नहीं है; जहां तक दृष्टि दौड़ाइये सूनसान मैदान का अत्यन्त विस्तार दूरपर आकाश गोलाकार—सब से पीछे आसमान और जंगल के मेलहोने के स्थान में वृक्षों की सफेद लकीर के माथेपर चांदका एक टुकड़ा चमक रहाथा। चन्द्रमाकी दीन हीन चांदनी सारे मैदान में चमकने को पूरीनहीं थी। उस छोटी छोरी चांदनी से अन्धकार मानो दूना हो-ता जाता था।

अबतक अनूपसिंह न आये। नौकर चाकर टीले के नीचे बैठेहुए अनूपसिंह के न आने का सोच बिचार करनेलगे।

चौथा बयान ॥

अकस्मात् टीले के ऊपर धुधकार २ के आग जलनेलगी! अग्नि के साथ २ ही स्त्रियों का चिल्लाना सुनाई दिया किसी से लाठी चलने का शब्द श्रवण गोचर होने लगा। आदमियोंकी दौड़ धूपकाशब्द और भी भयंकरबोध हुआ। देखतेही देखते चारों ओर घोर अशान्ति छायगई!

गांव से सहायता करने के लिये जो आदमी आये थे, वह कुछभी न करसके। पानी लाने आदमियों को बुलाने, टीलेपर चढ़ने और रोने चिल्लाने के समय मेंही घरजल कर राख होगया! काठ के मकान को जलते जलाते कितनी देर लगती है! इस बातको कोई नहीं समझसका कि किस ने आगदी और कैसेदी? वृथा शोर गुलमचाते हुए कुछ आदमी ऊपर चढ़े उस पहाड़की समान टीले की जलती हुई छाती में, चन्द्रमा की मलीन चांदनी डरावनी तसबीर को खेंचरही थी। आदमियों ने जल्दी से भीतर घुसकर देखा कि जो कुछ था वह सबही जल भुनकर राखहोगया। स्त्रियें कहाँ गईं? नौकर चाकरों का मुख सूखगया। इधर उधर चारों ओर खोज होने लगी। एक जगह पर एक अधजला शरीर देखकर पहचाना कि अनूपसिंह की स्त्री ने

जान पड़ी हुई है ! सबलोग हाय करके बैठगए ! स्वामी आकर क्या कहेंगे ? कन्या कहां है ? बहुतेरा तलाशकिया परन्तु कन्या को न पाया । खोजते २ टीले के पीछे गये, यहां पर एक गहरी नहरथी, सब लोग नहर को भलीभांति से देखने लगे । टीले से लेकर नहरतक अनेक मनुष्यों के चरण चिह्नपाये गये कहीं वृक्षों की डालियें टूटीहुईहैं ' कहीं लता लोट पोट हो रही हैं , कहीं के बांध में से कुछ मिट्टीखिसक पड़ी है । इन बातों के देखने से ज्ञात होता है किइस स्थान में कोई बड़ा झगड़ा हुआ है ! बहुत से आदमियों में लाठी चली है ।

इस प्रकार चिह्न देखकर सब आदमी परिखा अर्थात खाई के भीतर उतरपड़े । खाई में पंक से आधिक पानी नहीं था । खाई में उतरतेही सामने एक मृतक देह दिखाई दिया। उठाकर किनारे परलाये और देखा कि सर्दार अनूपसिंह का मृतक शरीर है !! उस दीन हीन चाटंनी में सर्दार अनूपसिंह का बदन बड़ाही डरावना दिखाई देता था !!! सब आदमी डरे, और अकचका कर रहगये, क्या कियाजाय, कुछभी समझ में न आया । इतनेही में पुलिस देवता के दर्शन हुए । आग के लगतेही एक आदमी बटाला के थाने में जाकर इत्तिला की थी ।

आठ सिपाहियों को साथ लेकर इन्सपेक्टरराहलभी आगये

प्रभात होगया, चन्द्रमा की रही सही छबिभी क्षीन होगई दिगन्त में ऊषा की लाली फैली हुई ज्ञात होने लगी। दो एक काग इस प्रकार से कांव २ करते हुए उड़गये कि मानो संसार की कोई छिपी हुई बात कहगए। केवल उस बातको वही दो चार आदमी समझे कि जिन्होंने रात के समय की भयंकर होनहार को देखा था।

इन्स पेक्टर साहब ने आकर अनेक प्रश्न किये, लाश की परीक्षा करके देखा कि शरीर में जगह २ पर लाठियों के दाग़ पड़े हुए हैं। लाठियों की चोट से शिर का भेजा निकल पड़ा है। मालूम हुआ कि इस पिछले ही वार से प्राण निकल गये हैं। किसनें खून किया, किस प्रकार से किया, अनूप सिंह इतनी रात तक कहां रहेथे, क्या करते थे, टीले की पिछली ओर से क्यों आये, घरमें आग किस प्रकार से लगी, कन्या कहांगई? इन बातों को इन्सपेक्टर साहब कुछ भी न समझे। उनको इनमें कुछ रहस्य साक्षात हुआ। नहर के किनारे से लेकर टीले के ऊपर तक देखभालकर उन्हों ने यह निश्चय किया कि बदमाश लोग सहज से अनूपसिंह को नहीं मार सकेहैं।

॥ पांचवां बयान ॥

पुलिस की तहकीकात से कोई फल न हुआ। इन्सपेक्टर

साहबने शीघ्रता के मारे' इश्तहार, देदिया कि जो कोई अपराधी वा अपराधियों को पकड़ देगा, या उनका पता बतलादेगा, वह ५००) रुपये ईनाम में पावेगा ॥

बहुतेरे मनुष्यों ने ईनाम लेना चाहा। किसीने पहाड़तक तलाश की। किसीने इसकी आवश्यकता न समझ कर, चिलममें तम्बाकू जमाय मुराब्बिआना तौरसे अपनी स्त्री से कहा" यह काम जिस तिसका नहीं है,, किसीने इतती आवश्यकता भी न समझी और हंसकर केही अपने अनुसन्धान को पूरा किया।

सब से पीछे एक सिक्ख तैयार हुआ। साहब ने कहा तुमारा नाम क्या है? ,,

" शेरसिंह। ,,

" टुमारी उमर अबी थोरी है, टुम इस कामको करने शकटा है ? ,,

" हां करलूंगा। आप मेरेसाथ आदमियों को भेजकर वारदात का मुकाम दिखलादें।

" इन्सपेक्टर साहब खुदही गये। और सब स्थानदिखा कर कुल हाल कहादिया, देखसुन कर शेरसिंह का मुख गंभीर हुआ।—गंभीर भावसेही निकटस्थ गांव के एक भले आदमी से कहा" आपने अनूप सिंह की लड़की को देखा है ?,,

" जीहाँ, वह बहुधा हमारे गांवमें आया आया करतीथीं।,,

" उसका चालचलन कैसाथा ? ,,

" बहुत नेक,,

" वह और भी कहीं जती थी ?

" कहीं भी नहीं, कारण कि दशमील के भीतरे और कोई गांवही नहीं है ।

शेरसिंह और कुछ न कहकर उस टीले को पिछली ओर गया। । ऊपर से नहरतक भलीभांति से तेज निगाह से देखकर कुछ हँसा । साहब ने दरियाफ्त किया—क्यादेखा ?

" अलग २ चारप्रकार के चरण चिह्न । अनूप सिंह को चार या तीन आदमियों ने मिलकर मारा है । मालूम होता है कि एक आदमी के पांव में कदाचित पलटन का अँगरेजी जूता था । यह देखिये ॥

साहबने मनही मन शेरसिंह को धन्यवाद देकर देखा कि जूते कादाग गहरा है । दाग की गढ़न से ज्ञात हुआ कि पल्टन के जूतेका निशान है । साहब सिर हिलाकर बोले „A brain puzzling mizmaze,,! (एक दिमाग को परेशान करने वालाभेद है)

शेरसिंह कुछ २ अंग्रेजी भी जानता था, साहब की बात को समझ कर कहा" पांवके दाग देखकर चोर को पकड़

नाहीं हमारा काम है * परन्तु अबकीबार टेढ़ी खीर है। देखिये नहर के किनारे से आगे फिर पांवके दाग नहीं देखते यह जो टाली (सीसम) वृक्षोंकी कतार दिखाई देती है, सम्भवता इस के ऊपर होकर ही अपराधी लोग घास के खेतमें को होलिये हैं। घास के ऊपर पांवके दाग नही पड़ते ! इसपर कदाचित वह जूता उतारकर गएहों पहले तो एक ओर चेष्टा की जाय, फिर पीछे जो होगा सो किया जायगा ॥

यहकह कर शेरसिंह ऊपर चढ़गया, साहब नीचे खड़े रहे। बहुत देरके बाद शेर लौट आया। शेरके मुखपर प्रफुल्लता देखकर साहब ने अनमने होकर कहा" A Mystery to be sure'! यकीन करनेलायकभेदहै।

शेरसिहने उत्तर दिया-Mystery मिस्ट्री(भेद-रहस्य) नहीं साहेब Clue क्ल्यू (पता) पाया है।

साहब का चेहरा दमकने लगा, बोले—कहां कहां?

---

* पंजाबके विशेष करके फ़ीरोजपुर जिलेके ट्रेकर्स Trackers मशहूर हैं। पांवके निशानदेखकर यहलोग चोरको इस प्रकार से पकड़ते हैं कि आश्चर्य होता है। डिटेक्टिव की नजर से चाहें बचजाय। परन्तु ट्रेकर्स की दृष्टिसे नहीं बच सकता ॥

शेरसिंह ने साहब के हाथमें एक बोदाम (बोताम बटन) दिया। साहब ने बोदाम को देखकर कहा,, यहतो पल्टन का बोडाम है, इसमें कुछ शक नहीं कि इस हंगामें भें पल्टन का एक सिपाही शरीक है। लेकिन कितनेही सिपाही हैं, किसको पकरा जाय, अबतक उसने नया बटन लगालिया होगा) सब बोटाम डेकने में एक टोरके होंटेहैं सिर्फ इस बोटाम की मडत से आसामी का पकरना नामुमकिन है ॥

" नामुमकिन है या मुमकिन, यह पीछे मालूम होगा। यह कहकर शेरसिंह ने रुखसत ली, और साहब भी अपने बंगले को सिधारे ॥

॥ छठाबयान ॥

बोदाम को लेकर शेरसिंह बटालेमें आया। प्रथम अनूपसिंह की टालमें गया। दोचार लोगों से दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि उक्त मृतक सरदार प्रतिदिन सन्ध्या के समय हरिसिंह चौलाकी शराब हट्टीपर होकर फिर गृह को आया करते थे ॥

उस दिन शेरसिंह बड़े ठाठसे हरसिंह चौला की दूकान पर आया। उसका अरबी घोड़ा, घड़ी की चेन, और डबल

पगड़ीदेख, हरिसिंह नें शेरसिंह को फर्शी सलाम किया। हरीसिंह ने कदाचित शेरसिंह को सेंधियाराज्य का सरदार समझा। शेरसिंह ने दशरुपये की जगह बीसरुपये देकर अपने लिये खरीदी, हरीसिंह ने सोचा कि यह शिकार तो खूब हाथ लगा॥

चार पांच दिन आनेजाने के कारण से शेरसिंह ने हरीसिंह के साथ अत्यन्त प्रीति करली, हरिसिंह के मन में लड्डू फूटने लगे॥

एकदिन सन्ध्या के समय पश्चात् शेरसिंह ने वहां जाकर देखा कि दो आदमी और भी बैठे हुए हैं। इन का मुख देखने से जानपड़ता था कि पिता पुत्र हैं। परन्तु इनके मनका भाव इतना मलीन था कि जिसके देखने सेही इतना ज्ञात होताथा कि इनका कुल परिवार नष्ट होगयाहै॥

शेरसिंह को देखतेही दोनों के चेहरे का रंग बदल गया लेकिन आखों का रंग नहीं बदला। उन्हों ने उठकर शेरसिंह का मान किया। पश्चात् बातचीत होनेलगी। बातही बात में शेरसिंह नें जानलिया कि पिताका नाम मोतीसिंह और पुत्रका नाम लहनासिंह है। पाठकगण! जाना कि यह कौन लोग हैं। मोतीसिंह और अनूपसिंह में जो कुछ एक दिलचली होगई थी इसबात को शेरसिंह जानता था। परन्तु उस दिलचली से कहीं यह भयंकर

बात होसकती है ? शेरसिंह के मन में इस सन्देह ने घर नहीं किया । शेरसिंह ने बातहीबात में उन से उनके दुःख का कारण पूछा, तब जाना की मोतीसिंह इस कारण दुखित है कि इसका एक पुत्र मिसर को जायगा। बातही बात में यह भी ज्ञात होगया कि यह पुत्र पहले पल्टन का सिपाही था, अब नोकरी छोड़कर मिसर को जाता है

इसबात को सुनकर शेरसिंह का सन्देह बढ़गया । शायद मोतीसिंह अपने अपमान को न भूला हो और बदला लिया हो । परन्तु कैसा भयानक बदला है !!! उसी समय बोदाम और जूते के दागकी याद आई, फिर उस तरफ मोतीसिंह का मिसर यात्री पुत्र भी सिपाही है। शेरसिंह का सन्देह दृढ़ होगया । फिर कुछ न कहा और चुपचाप वहां से चलदिया ॥

सातवां बयान ॥

दूसरे दिन आनकर देखा कि लहनासिंह इकला आया है । शेरसिंह ने सोचा कि अच्छा हुआ । लहनासिंह थोड़ी उमर वाला और बुरे चालचलन का आदमी है । इस

कांटे सेही कांटे को निकालना चाहिये। परन्तु दोचार बातों सेही मालूम होगया कि लेहना" पक्का,, है। शेर-सिंह ने विचारा, इसतरह काम नहीं चलैगा।' रस, देना उचित है। बिना (रस) के लहना गलने वाला नहीं शेरसिंह ने अपने खर्च से लहना को शराब पिलाई अपने खर्च सेही मिठाई खिलाई, मिठाई मीठे का काम कर गई अबतो दोनों भलीभांति एकप्राण दो देह होगये। शेरसिंह को ज्ञात होगया कि लहना के मिसर यात्री भ्राता का नाम दुर्जनसिंह है *। दुर्जनसिंह आज यहां पर आवेगा शेर सिंह को उसके देखने की लालसा बढ़ी। कौतूहलहोता चला, उत्कंठित चित्तसे दुर्जनसिंहकेआनकीबाट देखतारहा दुर्जन सिंह आया। यह नाम और रूप दोनों में दुर्जन था। सिक्ख सिपाही बहुधा जितने लम्बे चौड़े हुआ करते हैं यह उनसे कहीं अधिक था। सात फीट लम्बे और तीन फीट चौड़े ‡ पुरुष को देखकर शेरसिंह ने कहा कि "अच्छा जवान है।,,

---

* सिक्ख लोगों में पिता पुत्र, भ्राता आदि सब कोई एक साथ मिलकर शराब पीते हैं। इनके मतमें किसी काम को छिपकर करना पापहै. प्रगटमें पापनहीं। बाततोठीकहै।

‡ दरम्यानी जाट सिक्ख बहुधा६ या ६॥फीट ऊँचे होते.

दुर्जनसिंह सलाम करके बोला। पिताजी से आपका नाम सुनाथा, आज दर्शन पाकर अत्यानंद प्राप्त हुआ।

शेरसिंहने भली भांति से दुर्जन का आदर सत्कार किया। उस समय दुर्जनसिंह सिपाहियों की वरदी पहरे हुएथा। शेरसिंह शिरसे पांव तक उसको देखने लगा। वरदी के बोताम बहुत देरतक देखतारहा। देखाकि समस्त बोताम एकसे हैं, परन्तु चमक कुछ अधिक है। विचार किया कि

हैं। इसके अतिरिक्त मैंने ७ फीट और ७ फ़ीट ४ इंचके भी बहुत से देखे हैं। असल जवान अंग्रेजों की नौकरी नही करते; नोकरी वही करते हैं जिनको रोटी नहीं मि-लती। इन सिक्ख सिपाहियों को देखकर आश्चर्य होता है। अंग्रेजों ने असल जवानों को हं कं की रक्षा करने के लिये सरहदपर नियत किया है। ३४ नं० सिक्ख पैदल का नाम Pioneer giants है। जुबिली के समय जब रस्सी की खेंच वा Tug of war हुईथी, तब सिक्खों ने अंग्रज, पठान, गोर्खा, रांगड आदि सबको ही जीत लिया था। एक जाट पांच गोरों को ४० हाथ तक खेंच कर लेगया था। लाहौर के किले में एक हाईलैण्ड निवासी गोरे से सिक्ख ने कुश्ती की बाजी जीती थी। सिक्खने पट्ट होकर गोरे से कहा कि मुझे चित्त कर। परन्तु गोरा उस सिक्ख को चित्त नहीं करसका।

यदि सब बोदाम बदल डाले हों तो सब करा कराया मिट्टी होगया। परन्तु इसबात में शेरसिंह को कोई सन्देह नहीं रहा कि यह आदमी भी खून करने वालों में से एक है, या यही खूनो है। पहला प्रमाण—मोतीसिंह और लहनासिंह की उदासी, जैसे किसी डरकी छाया मुख पर पड़ी हुई है। दूसरा प्रमाण—घटना स्थान में तीन आदमियों के चरण चिन्ह और सिपाही का बोदाम। तीसरा प्रमाण—इस सिपाही का अकस्मात् मिसर को जाना। चौथाप्रमाण—सिपाही कहता है नौकरी छोड़दी, तो फिर फौज की वरदी क्यों पहरे है। यह आदमी अवश्य यहांसे भागना चाहताहै। अबचाहें जो कुछहो, खूनी तो पकड़ागया परन्तु सबूत नहींहैं। सबूत चाहियें, किस प्रकारसे मिलेंगे।

शेरसिंह यह विचार कर रहा था कि इतने में मोतीसिंह आपहुंचा, दुकानदार ने भी आकर अड्डा जमाया। क्रम से वह स्थान एक पूरा अड्डा होगया।

शेरसिंह ने अवसर पाकर अनूपसिंह की बात छेड़ी और कहा उस दिन रातको कैसी भयंकर बात हुई। कैसा जावन,था परन्तु बिचारा कुत्ते की मौत मारा गया—हे राम!

सब आदमी कांप गए। दूकानदार बोला "अनूपसिंह को शराब नें मारा,, शेरसिंह ने इसबात का कोई उत्तर न दिया और मोतीसिंह की ओर को फिरकर कहा "आपने अनूपसिंह को देखा है।"

मोतीसिंह के मुख का भाव क्या जाने कैसा होगया, फौरन उस भाव को छिपाया और अनमनें भाव से कहा. "हां, वह तो हमारे भाई थे ।,,

शेरसिंह कुछेक हंसकर चुप होगया. कुछ देर पीछे हरिसिंह चौला की ओर को फिर कर कहा सुना है कि वह प्रति दिन आपकी दूकानपर आते थे" क्या उस होनहार के दिन भी आएथे ?"

"जी हां"

"कितनी रात गए" ! ।

"कोई १० बजे के वक्त"

"दश बजे के वक्त" इस शब्द को सुनकर शेरसिंह का मन कुछेक हलका हुआ । और कहा । रात को यहां क्या करते थे ? ।

दूकानदार ने शेरसिंह के इतने रुपये खाएथे, कि उससे बिना इसबात का उत्तर दिए हुए न रहागया और बोला "साहब ! यह बहुत बड़ी बातहै, जो लोग आज बैठे हैं। उस दिन भी यह सब लोग बैंठेथे । अनूपसिंह के आनेपर सर्दार मोतीसिंह ने उनको एक गिलास रम दी । अनूपसिंह ने उसको नहीं पिया और कहा मैंने आज भांग पी है रम नहीं पियूंगा । केवल एक गिलास ठंडा शरबत दीजिये। शरबत तैयार था देदिया गया । रात्रि के समय

११ बजने के उपरान्त अनूपसिंह घर पर जाने के लिये उठे, परन्तु उठ न सके और कहा" मुझको बहुत नशा होगया है। कदाचित्त जा नहीं सकूंगाजीभ पर कांटे जम रहे हैं बिस्तर कर दीजियें, आराम करके जाऊंगा। बिस्तरा कर दिया गया, लेटकर वह तड़फने लगे और बोले कि "इतना नशा होगयाहै जिसके कारण मैं सँभल नहीं सकताहूं। मैंने मद दिया, क्योंकि भांग की औषधि मदिरा है परन्तु सर्दार मोतीसिंह ने मुझको रोक कर कहा यह उलटा गुण करेगी मैं औषधि मंगवाता हूं यह, कहकर इन्होंने सर्दार दुर्जनसिंह को भेजा।

शेरसिंह बीचमें बोलउठे" वह बूंटी कहां मिलती है ? ,,

हरिसिंहने दुर्जनसिंह की ओर देखा। दुर्जनसिंह अकचकाकर बोला जहां पर सर्दार अनूपसिंह का स्थान है वहां से आध मील दक्षिण को जो गांव है उसमें वह बूटी पाई जाती है।

शेरसिंह। " फिर क्या हुआ ? ,,

हरिसिंह कहने लगा" उसके बाद दो या तीन बजेके समय अनूपसिंह आप से आप चंगे होगये, मेरे रोकनें और मना करनें पर भी वह उतनी रातगये। मकान को गए। आगे के वृत्तान्त को तो सबही जानते हैं।,,

हरिसिंह की बात के पूर्ण [illegible] र [illegible] अक-

ना और दुर्जन सलाम करके चलेगए। शेरसिंहनेंउनसे किसी बात के बूझनेका अवसर नपाया, परन्तु इस व्यवहार से हृदय में उदय हुआ सन्देह अवश्य पक्का होगया ।

॥ आठवां बयान ॥

उसही रातको शेरसिंह ११ बजे के समय उसगांव को चले कि जहांपर भांग की दवाई मिलती थी ॥ स्यात् कोई बात ज्ञात होजाय ।

कोई ११ बजे रात के उस गांव में पहुंचे। गांव छोटा है, परन्तु है इस में सबकुछ। तीन हाथ चौड़ा पांच हाथ लम्बा बाजार है, बाजार में भुने हुए चनों से लेकर गुड़ तक पाया जाता है।

शेरसिंह के पहुंचनें के समय गांव में अंधकार था। ग्यारह बजे रातको तो बटाला का उजाला भी बुझजाता है। बड़े भाग्यकी बात यह हुई कि शेरसिंह कोतवाल की पोशाक पहरे हुये थे। गांवका पहरेदार आसमान के तारे गिनरहा था, स्यात् किसी नई बातको ईजाद करके संसार का उपकार करनें की चेष्टा कररहा हो, परन्तु दुष्ट संसार इस बातको किस कारण सहलेगा ? अचानक नींद के हूटे [illegible] पर [illegible] कि कोतवाल साहब खड़े हैं।

यह नकली कोतवाल बनेहुए शेरसिंह थे। पहरेदार नें सिटपिटाकर गिड़ गिड़ाते हुए एक फर्शी सलाम किया शेरसिंहने बड़ी कठिनाई से हास्य रोक कर कहा। "मैं अमृतसर का कोतवाल हूं, यहां पर किसी काम के लिये आया हूं। तुम्हारे काम को देखकर बड़ा अफसोस किया खैर! अबकी बार तो माफ किया आगे को होशियार रहना। तुम कितने दिनों से यहां पर हो?

चौकीदार नें कलेजे को थामकर उत्तर दिया" माई बाप को दो वर्ष हुए।

"जिस रातको अनूपसिंह के मकान पर आगलगी और अनूपसिंह मारागया, उस रात में तुम कहां थे।,,

"माई बाप इसीगांव में था।,,

"मदद के लिये नहीं गये?,,

"मैं जानहीं सका, गांवके और लोग बागगए थे।,,

"तुम क्यों नहीं जा सके थे?,,

"एक सिपाही मुझको घायल कर गया था।,,

सिपाही का नाम सुनतेही शेरसिंह हर्षित होगया। हृदय में एक नई आशा का संचार हुआ और कहा" सबबात खोलकर कह॥"

चौकीदार बोला। "उस रातको इस गांवमें एक व्याह था, सब कोई जागकर खुशी होरहे थे। रात में एकबजे

के बखत एक पल्टन के सिपाही नें आकर थोड़ासा पानी मांगा । सिपाही एक बलवान सिक्ख जवान था । उस नें फौज की उरदी पहन रक्खी थी । वह पानी पीकर चला चाहता था । कि इतने में उसकी जेब से एक शराब की बोतल गिरकर टूटगई । बोतल को टूटता हुआ देखकर गांवके रहने वाले ठट्ठामार कर हँसनें लगे । सिपाही नें इस हँसीसे अपना अपमान समझ कर लाठी से सबकी खबरली । गांव वालों ने भी छोड़ कर बात न की, परन्तु सिपाही बड़ा ज्वान और हिम्मतदार था–किसी तरह नहीं हटा । उसकी लाठी से बहुत से गँवइयों नें सखत घाव खाया । सब से पीछे मैं गया । पांच मिनट तक उसके साथ लड़ता रहा, पीछे उसनें मुझे उठाकर नाली में फेंकदिया मैं बेहोश होगया, फिर कुछ खबर नहीं कि क्या हुआ । भोर होंने पर उठा तब जाना कि अनूपसिंह मारे गए ।'

अब शेरसिंह को प्रकाश दिखाई दिया उन्हों नें चौकीदार से कहा' " उस सिपाही को देखकर पहचान सकते हो,,

" जी हां । ,,

" कल शाम के वक्त तुम बटाला के थानेपर आना । तुम्हारी जगह पर दूसरा आदमी भेजदिया जायगा । ,,

" चौकीदार नें सलाम करके कहा" मैं हजूरका गुलामहूं।,,

शेरसिंह बटालाको लौटआए और मनमें अपार आनन्दहुआ।

॥ नवां बयान ॥

दूसरे दिन संध्या के समय पहरेदार को लेकर शेरसिंह हरिसिंह के अड्डे में जा पहुंचा। उसदिन भी दुर्ज्जन सिंह आया था। चौकीदार नें देखतेही पहचान लिया परन्तु दुर्जनसिंह नें चौकीर दार को नहीं पहिचाना चौकी-दार बरदी नहीं पहरे हुए था॥

अब कोई सन्देह नहीं रहा, केवल सबूत लेकर गिर-फ्तार करतेही सबकाम ठीक होजायगा॥

चौकीदार को रुख्सत कर शेरसिंह दुर्ज्जन के पास आकर बैठगया और कहा—"एनकोर ह्विसकी।" फौरन सामने हाजिर हुई। शेरसिंह ने दुर्जनसिंह से इसका सद्-व्यवहार करनेको कहा, दुर्जनसिंह नें बिना किसी उज्रके इस व्यवहार को स्वीकार किया। शब्द सिहत "ह्विसकी देवी," की पूजा होनें लगी॥

जब दो दौर खतम हुए तब शेरसिंह नें कहा। "आप

जाते हैं लेकिन आप से मेरामन अत्यन्तही प्रसन्न है। क्या मिसर में आपका कोई काम है॥

दुर्जनकी आंखों में लाली समागई थी। दुर्जन बोला!! हां हमारे मामा खेदिव के एक शरीर रक्षक हैं। मामा इस समय वृद्ध होगए हैं, इस कारण मुझको उस नोकरी पर बहाल करने के लिये बुलाया है। मैं देखता हूं कि यहां की बनिस्बत वहां अधिक लाभ है।

शेरसिंह ने मनहीं मन हंसकर कहा, "ठीक! आपको यह अवसर नहीं छोड़ना चाहिये। आप कब जांयगे?।,,

शेरसिंह के ऊपर दुर्जनसिंह को कोई भी सन्देह नहीं था। दुर्जन बिचारता था कि शेरसिंह कोई धनी सर्दार, हमारा बन्धु वा एक ग्लास का यार है। इसकारण साफ २ बोला। कलरात की गाड़ी में रवाना होकर सोम्बार के दिन निश्चय बम्बई पहुंच जाऊंगा। वहां तीन दिन रहकर शुक्रवार को मिसर के लिये यात्रा करूंगा।

इसके पश्चात् शेरसिंहने कुछ न कहा। एक दौर फिराकर बिदा ली, और कहा "आज तबीयत बड़ी खराब है, कदाचित मुझको भी दो एक दिनमें बम्बई जाना पड़ेगा। वहां पर मेरी बहिन बहुत बीमारहै, स्यात् बम्बई में फिर आपसे मुलाकात होगी।,,

इसको सुनकर प्रसन्न होनेके अतिरिक्त दुर्जन अप्रसन्न

नहीं हुआ, क्योंकि दुर्ज्जन नें सोचा था" बम्बई में इस साले से कुछ ऐंठेंगे।,,

दुर्जन—सावधान हो !

॥ दसवांबयान ॥

उसीरात को शेरसिंह नें बम्बई को कूच किया और अँगेरजोंकी कृपासे दुर्जन के पहुँचनें से एक दिन पहलेही बम्बई पहुँच गया। थाने में जाकर बटाला के सब-इन्सपेक्टर की, एक चिट्ठी दिखाई और ४ गोरे व चार देशी सिपाही साथलिंये, शेरसिंह जानता था कि आठ से कम आदमी दुर्ज्जन को गिरफ्तार नहीं करसकते।

आज शुक्रबार है। शेरसिंह ने नीचे पुलिस की बरदी और ऊपर साधारण आदमियों का पहिरावा पहिरा। पुलिसके आदमियों नें भी ऐसाही किया। जिस जहाज पर दुर्जन चढ़ने को था, उसके कप्तान से जाकर कहा " आज आपके जहाज पर एक खूनी आवैगा, हम उसको गिरफ्तार करेंगे, आशा है कि उसके गिरफ्तार करनें से आपको कोई उज्र नहोगा।

कप्तानसाहब बहुतही चिन चिनाए, परन्तु इन्सपेक्टर की चिट्ठी और पुलिसकी पौशाक देखतेही दबगए, बरन यह भी कहा कि जहांतक होगा हम भी सहायता देंगे।

फिर शेरसिंहनें अपने साथवालों को पास बुलाकर कहा तुमलोग एक जगह न इकट्ठे होकर इधर उधर फिरते रहो। मेरा इशारा पातेही उसकाठ के ढेर में मिट्टीका तेल डालकर आगलगा देना। परन्तु होशियार रहो कि जहाज का कोई नुक्सान न हो। आगलगाकर खूब चि- ल्लाना। जब बहुत से आदमी आगबुझानें को आवें तो तुम होशियारी से और मिट्टी का तेल आग में डालदेना लेकिन जैसेही मैं बिगुल बजाऊँ फौरन यहां पर आजाना।

आठ आदमी आठ तरफ को चलेगए। जहाज के छूट ने में अभी दो घंटे बाकी हैं, इतनेही में दुर्जनसिंह आकर जहाज पर बैठगया, उसवक्त दुर्जनसिंह सिपाही की पौ- शाक नहीं पहरे हुएथा, बरदी स्यात् बेग में धरीथी, क्यों कि बेगकी दराज से कुछ २ रंग ज्ञात होता था। शेरसिंह नें अपनी जेब में हाथडाल कर देखा कि बादाम मौजूद है धीरज किया। दुर्जनसिंह नें एकसाथ शेरसिंह को देखकर आश्चर्य किया और सलाम करके कहा। “ आपतो सत्य २ ही आगए। ,,

शेरसिंह सलाम का जवाब देकर बोले। “ बिना आये

भी तो नहीं बनती ? बहिन कठिन पीड़ा पा रही है । आप से न जाने कब मुलाकात हो, इस सबब कदमबोशी हासिल करनें के लिये आयाहूं । ,,

दुर्जन सलाम करके बोला—"यह मेरेभाग्य की बातहै।,, फिर इधर उधर की बातें होनेंलगीं । जिन चारगोरोंको शेरसिंह अपने साथ लाया था, उनमें से एक गोरा शेरसिंह के पास होकर निकला, शेरसिंहनें दुर्जन के न जानते हुए उसको इशारा कियां । बातें चलनें लगीं ! बातोंहीं बातों में दुर्जन नें अपनी अवस्था का कहना आरंभ किया । शेरसिंह नें इसके लिये अत्यन्त दुःख प्रकाश किया । शेरसिंह के पास से दुर्जन कुछ ऐंठना चाहता था कि इतने में जहाज की पश्चिम ओर शब्द हुआ । " आगलगी आगलगी, दौड़ो दौड़ो,, "पानी पानी,, इस प्रकार का महाशब्द होनें लगा ।

दुर्जन घबड़ाकर उठा और बोला । "क्याहुआ ? ,, शेरसिंह बोला " मालूम होताहै कि जहाज पर आगलगी । " आपमेरा बेग सम्हालें मैं देखआऊं । " यह कहकर दुर्जन उस तरफ को भागा ।

शेरसिंह की यही इच्छाथी । उन्होंनें शीघ्रता से बेग खोलकर दुर्जन का कोट बाहर निकाला । एक २ करके सब बोदाम देखे, सबही एकसे और सबहीं साफ हैं ।

जेब से उस बोदाम को निकाल कर मिलाया तो वह भी वरदी में लगेहुए बोदामों से मिलगया । अन्तर इतना था कि यह मैलाथा और वह सब साफ थे । स्यात् दुर्जन नें एकनया बोतामलगाकर और दूसरे बोतामों को भी मांज घिसकर नया किया है । परन्तु इस साबूत से तो काम नहीं चलेगा । क्योंकि अदालत में तो यह दिखाना पड़ेगा कि कौनसा नया है, और वह नया किस स्थान में लगाया गया है ।

शेरसिंह का मुख मलीन हुआ । परन्तु कुछही विलम्ब पीछे फिर मुखपर आनन्द के चिह्न दिखाई दिये ! मानों कोई साबूत मिलगया । कोट उलट कर प्रत्येक बोदाम की सिलाई देखी । देखा तो सूत पुराना है । एक, दो, तीन,—चौथे बोदाम का सूत नया है । यह सूत सफेद था । पहले बोदाम को निकाला तो उस के साथ वरदी में लगे हुए बोदामों का सूत मिलगया । शेरसिंह समझ गये कि यह चौथा बोदाम नया लगाया गया है । उसका साबूत भी मिलगया । मारे आनन्द के कूदपड़े । इतने दिनों की मेहनत का फल आज मिलगया । झटपट कोट को बेग में रखके बिगुल बजाया । बिगुल के बजतेही आठ आदमी इन के पास आगए । इनको दूरखड़ा रहनें के लियेकहकर शेरसिंह आगे बढ़ा । इतनेही में दुर्जन सिंह

वहां आ पहुंचा। दुर्जन सिंहको देखकर शेरसिंहने अपनी सूरत बदली और कहा " दुर्जनसिंह ! तुमने जो बेकसूर अनूपसिंह और उसके खानदान का खून किया। आज उसके फलका दिन आपहुंचा है!! मेरा कोई कसूर नहीं है, मैं ईश्वर की दुहाई देकर तुमको गिरफ्तार करता हूं यह कहकर शेरसिंह ने दुर्जनसिंह का हाथ पकड़ा।

दुर्जनसिंह की आंखें लाल होआईं, उस ने कहा " इसी लिये मेरा पीछा लिया था " यह कहकर शेरसिंह के मुंह पर एक तमाचा दिया, तमाचे के लगतेही शेरसिंह चार हाथपर जाकर गिरे। यह देखतेही गोरे और देशी सिपाहियों ने एक साथ दुर्जन पर वार किया। दुर्जन सरलता से उनको हटाने लगा। इसी अवसर में शेरसिंह ने उठकर ऊपरका चोगा खोलडाला, पुलिस के भेष से दुर्जन के सामने जाकर वह बोदाम दिखाया। बोदामको देखतेही दुर्जन का मुख सूख गया, रंगपीला पड़गया। दुर्जन बेंग के ऊपर बैठगया। तब शेरसिंह बोला " दुर्जन यह बोदाम किसका है ? मैंने तुम्हारा कोट देखाहै।

दुर्जन का मुँह नीला होगया और बोला कि यह बोदाम मेरा है। ,,

" तो यह खून तुमने हीं किये हैं !

" अब झूठ बोलने से क्या काम, बेशक मैंनेहीं खून किये हैं।

तब शेरसिंह, दुर्जन को गिरफ्तार करके थाने में लेगये।

॥ ग्यारहवां बयान ॥

थाने में सब बातें ज्ञात होगई। अनूपसिंह से अपमा-नित होकर मोतीसिंह ने प्रतिज्ञा की थी कि जैसे बनेंवैसे अनूप सिंह की कन्या को चुराकर अपना बदला लेना चाहिये। प्रगट में अनूपसिंह की खुशामत करना और भीतरही भीतर बदला लेनें का उपाय करता रहा। बड़ा पुत्र करमसिंह और बिचला दुर्जन सिंह यह दोनों बटाले में आकर मिले। लहनातो थाही, पितापुत्र में सम्मति होने लगी, प्रगट में अनूपसिंह से प्रीत बढ़ाई, मोतीसिंह की यह इच्छा नहीं थी कि अनूपसिंह को मारडाला जावै किसी प्रकार से अनूपसिंह को अलग करके उसकी कन्या को हरण करलेनाहीं इनका अभिप्राय था, क्योंकि अनूप-सिंह के रहते हुए यह काम नहीं होसकता। हरिसिंह चौला को घूस देकर शरबत के साथ भांगका सत खिला कर बेहोश कियागया। भांगकी औषधि का नाम करके मोतीसिंह ने दुर्जन को इशारा किया था। दुर्जन, करम,

और लहना यह तीनों अनूपसिंह की कन्या को चुराने के लिये गये। मार्ग के बीच गांव में जाकर दुर्जन ने गांव वालों के साथ जो झगड़ा किया वह पाठकगणों को पहलेही ज्ञात होगया है। यह झगड़ाही काल होगया। पहाड़ के पिछाड़ी से यह लोग ऊपर को चले। अनूपसिंह की बाट देखते २ इतनी रात गये उनकी स्त्री और लड़की भोजन करने को बैठी थीं, सामनेही तीन अनजाने पुरुषों को देख भयभीत होकर उठबैठीं। लहनासिंह ने जाकर अनूपसिंह की लड़की को पकड़ा, तब लड़कीकी माचिल्लाई दुर्जन ने मुखबन्द करने के लिये उसका गला पकड़लिया। परन्तु दुर्जन की समान सिपाही के हाथ में गला आजाने से बिचारी अबला की जीव लीला समाप्त होगई। प्रथम इन दुष्टों की इच्छा खून करने की नहीं थी, परन्तु खून को छिपाने के लिये चलती बार घर में आग लगादी— काठकाघर महाशब्द कर के जलने लगा तब यहदुष्ट अनूपसिंह की कन्या को लेकर पहाड़ की पिछली ओर से चले। सन्मुखही अनूपसिंह आपहुँचे। नशा छूटने पर अनूपसिंह मकान को आतेथे। अचानक दूर से देखा कि घरमें आगलगी है।घोड़े को सरपट दौड़ाकर पास आये। सामने से जाने में फेर पड़ेगा,इस कारण पीछे से ऊपर को आरहे थे। कि अचानक सामने से तीन अपरिचित आदमियों को

आता हुआ देखकर खड़े होगये । पापको प्रकट हुआ देखकर अनूपसिंह की कन्याको कुयें में डालकर अनूपसिंह पर चढ़ाई की । असुर की समान बलवान अनूपसिंह सरलता से बश में न आये, बहुत देर तक जूझे । फिर दुर्जनसिंह नें लाठी से अनूपसिंह को मार गिराया । नहर में लाशको डालकर अपना रस्तापकड़ा ।

दुर्भाग्य से इस झगड़े के समय दुर्जन का एक बोदाम टूटकर गिरपड़ा था । दुर्जन को नहीं मालूम था कि यह बोदाम ही पीछे से प्राणो का ग्राहक होगा । इसके आगे जो कुछ हुआ, इसको तो पाठकगण जानतेही हैं ।

दुर्जन नें अपने बचाव के लिये बहुतसी बुद्धि चलाई, परन्तु फंदेमें फँसही गया । मोतीसिंह. करमसिंह और लहनासिंह यह तीनों पकड़े गये ।

विचार होगया । दुर्जन नें लाहौर में आकर छावनी के बीच कलादिखाई (यानी फांसीपाई) मोती, और लहना सिंह नें समुद्र यात्राकी (काले पानीगए) करमसिंहनें सात वर्षतक श्रीघर (जेलखाने) में रहनें की आज्ञापाई । हरिसिंह हँसता खेलता हुआ ५००) रुपये दक्षिणा (जुरमाना) देगया ।

इन्सपेक्टर साहब नें शेरसिंह की अत्यन्त प्रशंसा करके कहा तुमारे काम से अम बहुत पसंद हुआ । बोटाम और

सूट (सूत) से चोर का पकरना बेशक नई बाट है । टुम को पांसो रुपये की एव्ज एक हजार रुपया इनाम डिया जाटाहै । ,,

शेरशिंहनें कहा " हजूर ! मुआफ कीजिये, मैंने रुपये के लिये यह काम नहीं किया । अनूपसिंह मेरेभाईथे । मैंने उनकी तरफसे बदला लिया है । मैं अमृतसरका सरदार नरेन्द्रसिंह हूं । ,, *

सबलोग भैचक रहगये । किसनें नरेन्द्रसिंहका नाम नहीं सुनाथा ? " सोब्राऊँ " के युद्ध में किसनें नरेन्द्रसिंह के पिता को नहीं देखाथा ।

---

* सिक्ख लोग ' नरीन्दर, कहा करते हैं ।

॥ इति समाप्तम् ॥
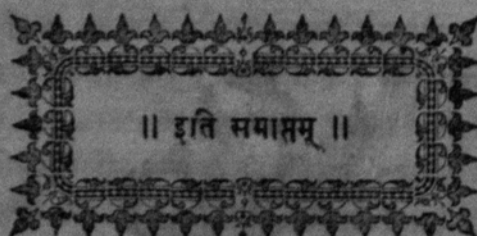
। दोबातें ।

प्रिय पाठक गण !

बहुत से नाटक उपन्यास आप पढ़चुके हैं अब इस क्षुद्र उपन्यास को भी आदि से अंततक पढ़जाइये यदि मनोगत हो तो पत्र लिखये तब और भी कुछ उपहार लेकर मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूंगा, नहीं तो इसी साक्षात् को पिछला साक्षात् समझिये

सच्चा शुभचिन्तक

उत्तमसिंह गढ़वाली

विक्टोरिया क्लब मुरादाबाद